टपक सिंचाई से बड़कीचापी की संजोती करती हैं करैले की खेती

जिला लोहरदगा

पंचायतनामा डेस्क

लोहरदगा जिले के कुडू प्रखंड अंतर्गत बड़कीचापी गांव की रहनेवाली है संजोती देवी. साल 2009 में स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं संजोती आज करेले की खेती कर स्वावलंबी बन गयी है. साल 2010 में पति की मृत्यु के बाद से संजोती की आर्थिक स्थिति काफी खराब हो गयी थी. घर-परिवार चलाने के लिए महुआ से शराब बनाने के काम में लगी थी ताकि रोजी-रोटी चल सके. लेकिन, संजोती का मन इस काम में नहीं लगता था. हालांकि, सखी मंडल से जुड़ने के कारण महुआ से शराब बनाने के काम को छोड़ा और सखी मंडल की गतिविधियों में सक्रिय हो गयी. खेती-बारी में रुचि रखने के कारण टपक सिंचाई के माध्यम से करैले की खेती करने को ठानी. इसी बीच कुडू प्रखंड में जेएसएलपीएस की ओर से झिमडी प्रोजेक्ट के तहत टपक सिंचाई योजना से खेती-बारी के लिए कार्यक्रम आयोजित हुआ. इस कार्यक्रम में संजोती ने भी अपना रजिस्ट्रेशन कराया और उन्नत तरीके से टपक सिंचाई माध्यम से खेती-बारी के गुर सीखी. इस जानकारी का संजोती को काफी लाभ मिला. मात्र 25 डिसमिल वाले खेत में केवल 10 तुड़ाई में ही करीब 550 किलोग्राम करैले का उत्पादन हुआ. देखते ही देखते संजोती आज सीमांत किसान की श्रेणी में आ गयी. इस दौरान संजोती बड़कीचापी गांव में टपक सिंचाई के माध्यम से खेती करने वाली पहली महिला किसान बन गयी. करीब 18 रुपये किलो की दर से अपने उत्पादित करेले को बेच कर संजोती ने करीब 10 हजार रुपये की आमदनी की. अच्छी आमदनी पाकर संजोती काफी खुश है. अब संजोती की इच्छा हर महीने एक लाख रुपये की आमदनी करने की है. साथ ही अन्य महिलाओं को भी उन्नत तकनीक से खेती-बारी करने को प्रोत्साहित भी कर रही है.

जायका प्रोजेक्ट ने रिमनी उरांव के जीवन में लाया बदलाव

चटकपुर पंचायत के जीमा गांव की ही एक अन्य सफल महिला किसान हैं रिमनी उरांव. रिमनी को जायका प्रोजेक्ट के तहत ड्रीप इरिगेशन योजना का लाभ मिला. खेती-बारी की आधुनिक तकनीक व पौधे की नर्सरी बनाने की जानकारी भी मिली. इसका परिणाम हुआ कि रिमनी ने अपनी 25 डिसमिल जमीन पर खेती-बारी शुरू की. आधुनिक तकनीक से खेती-बारी करने के कारण उन्हें काफी लाभ भी मिला. अपने खेत में उपजे करैले को बेच कर रिमनी को करीब पांच हजार रुपये की आमदनी हुई.

साल 2005 में सरस्वती महिला समूह से जुड़ीं थीं रिमनी : सफल महिला किसान रिमनी उरांव साल 2005 में सरस्वती आजीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं. समूह से जुड़ने के कुछ समय बाद वह अपने समूह की अध्यक्ष बनीं. इसके साथ ही बुककीपर का भी काम करने लगीं. आज भी वह बुककीपर के रूप में कार्य कर रही हैं. समूह से जुड़ने से पहले रिमनी को कई चीजों की जानकारी नहीं थी. सरकारी योजनाओं से भी अंजान थीं. उन्नत तकनीक की जानकारी भी नहीं के बराबर थी, लेकिन समूह से जुड़ने के बाद रिमनी में काफी परिवर्तन आया. जहां अपने समूह को वह बेहतर ढंग से चला रही हैं, वहीं खेती-किसानी में रुचि रखने के कारण अपने खेतों में आधुनिक तकनीक का भी उपयोग किया और इसका परिणाम भी बेहतर आया.

आगे बढ़ने के लिए जेएसएलपीएस का मिला साथ : रिमनी उरांव

सफल महिला किसान व सखी मंडल सदस्य रिमनी उरांव कहती हैं कि जेएसएलपीएस ने उन्हें आगे बढ़ने का हौसला दिया. अब वह अकेले नहीं हैं. उनके साथ समूह खड़ा है. समूह के कारण ही आज उनकी जिंदगी बदल गयी है.

सब्जी की खेती कर आत्मनिर्भर बनतीं जीमा गांव की वीणा भगत

चटकपुर पंचायत के जीमा गांव की रहनेवाली हैं वीणा भगत. वह आज सफल महिला किसान हैं. कृषि मित्र वीणा अपनी 50 डिसमिल जमीन पर सब्जी का उत्पादन कर आत्मनिर्भर बन गयी हैं. करीब 15 हजार रुपये का तरबूज, पांच हजार रुपये का करैला, ढाई हजार रुपये की हरी मिर्च समेत अन्य सब्जियां बेच चुकी हैं. सखी मंडल की सदस्य वीणा भगत ने सफलता की शानदार मिसाल पेश की है. खेती-बारी से स्वावलंबी बनीं वीणा इसका सारा श्रेय जेएसएलपीएस को देती हैं. कहती हैं कि जेएसएलपीएस ने सहारा दिया और कठिन परिश्रम ने उन्हें इस मुकाम तक पहुंचाया है. आज उनके पास मकान के अलावा दो पहिया वाहन भी है. कृषि मित्र वीणा भगत साल 2010 में पूजा महिला मंडल से जुड़ीं. साल 2013 में पूजा महिला मंडल का विलय जेएसएलपीएस में हो गया. जेएसएलपीएस से जुड़ने के बाद वीणा भगत में काफी बदलाव आया है.

चावल खरीदने को लिया लोन

समूह से जुड़ने से पहले वीणा की स्थिति अच्छी नहीं थी. वीणा ने गरीबी को करीब से देखा. चावल खरीदने के लिए वीणा ने समूह से लोन लिया था. किसी तरह से घर-परिवार चले इसके लिए वीणा ने काफी मेहनत की. उन्होंने चावल खरीदने के लिए लिये गये पहले लोन को चुकता कर 20 हजार रुपये का दूसरा लोन लिया. इस राशि को उन्होंने घर बनाने में लगाया. फिलहाल उन्होंने समूह से एक लाख रुपये का लोन लेकर सूकर पालन का काम भी शुरू किया है.

ड्रीप इरिगेशन का मिलता लाभ

जायका प्रोजेक्ट के तहत ड्रीप इरिगेशन से वीणा को खेती-बारी करने में काफी सहूलियत होने लगी. सिंचाई के लिए अब उन्हें परेशान नहीं होना पड़ता है. वर्तमान में उनके खेत में तरबूज, करैला, मिर्च, खीरा आदि लगे हुए हैं.

अपने खेत से तोड़े गये तरबूजे के साथ वीणा भगत.

कृषि मित्र का हुआ चयन

समूह में सक्रिय रहने व खेती-बारी में विशेष दिलचस्पी रखने के कारण वीणा का चयन कृषि मित्र के रूप में हुआ. कृषि मित्र में काम करते हुए उन्हें मानदेय मिलने लगा. वीणा ने समूह से स्कूटी खरीदने के लिए 20 हजार रुपये का लोन लिया. स्कूटी लेने से वीणा को काफी फायदा हुआ. कहीं आने-जाने में अब परेशानी नहीं होती है. सब्जियों की खेती से होनेवाले मुनाफे से वीणा लोन भी चुकता कर रही हैं.

समूह ने मेरी जिंदगी बेहतर बना दी : वीणा भगत

कृषि मित्र वीणा भगत कहती हैं कि मैंने काफी बुरे दिन देखे हैं. आज मैं जिस जगह खड़ी हूं, उसमें समूह का काफी योगदान है. कहती हैं कि समूह ने मेरी जिंदगी बदल दी है. अगर समूह नहीं होता, तो आज इस मुकाम तक नहीं पहुंच पाती.